वैदिक संस्कृति का उद्घोषक

ओ३म्

वैदिक सार्वदेशिक

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली का साप्ताहिक मुख-पत्र

शुल्क :- एक प्रति 5 रुपया (भारत में) वार्षिक 250 रुपये तथा आजीवन 2500 रुपये

वर्ष 19 अंक 3 | कुल पृष्ठ-8 | 7 से 13 दिसम्बर, 2023 | दयानन्दाब्द 198 | सृष्टि सम्वत् 1960853124 | सम्वत् 2080 | आ. शु.-11

आर्य समाज टाण्डा का 132वाँ वार्षिकोत्सव समारोह भव्यता के साथ हुआ सम्पन्न

वसुधैव कुटुम्बकम् की भावना विश्व शांति का आधार है – स्वामी आर्यवेश

समस्त ज्ञान–विज्ञान वेदों में उपलब्ध है – वेद प्रकाश श्रोत्रिय

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने हमें कहा था वेदों की ओर लौटो – डॉ. ज्वलन्त कुमार

आर्य समाज को सामाजिक परिवर्तन के लिए आगे आना चाहिए – डॉ. रघुवीर वेदालंकार

मानव मात्र के कल्याण के लिए ईश्वर ने वेद ज्ञान दिया – डॉ. सूर्या देवी

महर्षि दयानन्द के उपकार कभी भुलाये नहीं जा सकते – आनन्द कुमार आर्य

आर्य समाज टाण्डा, अम्बेडकर नगर का 132वाँ वार्षिकोत्सव एवं महर्षि दयानन्द सरस्वती जी की 200वीं जन्म जयंती वर्ष के उपलक्ष्य में कार्तिक सुदी द्वादशी से पूर्णिमा विक्रम सम्वत्–2080 तद्नुसार, 24 से 27 नवम्बर, 2023 तक स्थानीय डी. ए. वी. एकेडमी परिसर में समारोह पूर्वक मनाया गया, जिसमें देशभर से जाने–माने संन्यासी, उपदेशक, भजनोपदेशक, गुरुकुल की ब्रह्मचारिणी द्वय और प्रदेश के अनेक जनपदों से आर्य समाज के पदाधिकारियों एवं सदस्यों ने अपनी उपस्थिति दर्ज कराई।

कार्यक्रम का शुभारंभ 24 नवम्बर, 2023 को प्रातः 7.30 बजे से चतुर्वेद शतकम् यज्ञ के साथ हुआ। यज्ञ के ब्रह्मा के रूप में आचार्य चन्द्रदेव शास्त्री (फर्रुखाबाद) जी उपस्थित रहे। मंत्र पाठ के लिए आर्य कन्या गुरुकुल, शिवगंज, सिरोही– राजस्थान की वेद पाठी छात्राओं की उपस्थिति उल्लेखनीय रही। यज्ञ के पश्चात "वेद श्री" स्वामी आर्यवेश जी के कर कमलों द्वारा ध्वजारोहण के पश्चात् आयोजन का विधिवत उद्घाटन किया गया।

अपराह्न 2 बजे मिश्री लाल आर्य कन्या इंटर कॉलेज, डी. ए. वी. एकेडमी टाण्डा, डी. वी. एम. इंग्लिश एकेडमी व आर्य कन्या महाविद्यालय, टाण्डा के छात्र–छात्राओं, आर्य समाज टाण्डा व जनपद की अन्य आर्य समाजों के पदाधिकारियों व सदस्यों सहित आमंत्रित विद्वतजनों ने नगर में अत्यंत भव्य शोभायात्रा भी निकाली। शोभा यात्रा में हजारों छात्र–छात्राओं एवं आर्यजनों ने महर्षि दयानन्द एवं आर्य समाज अमर रहे के नारों से आसमान को गुंजा दिया था। नगर में स्थान–स्थान पर शोभा यात्रा का भव्य स्वागत किया गया। नगर मुख्य चौराहे पर इंडियन नेशनल मुस्लिम वेलफेयर एसोसिएशन के नवयुवक पदाधिकारियों ने स्वामी आर्यवेश जी एवं बाबू आनन्द कुमार आर्य जी के अतिरिक्त अन्य विद्वानों को सम्मानित किया और मिठाई भी बांटी। शोभा यात्रा की विशेषता यह थी कि इसमें भाग लेने वाली छात्राओं में अधिकतम संख्या मुस्लिम छात्राओं की थी और वे सभी हाथों में ओ३म् के झण्डे लिए हुए वैदिक धर्म के जयकारे लगाते हुए चल रही थीं।

मुख्य चौक पर स्वामी आर्यवेश जी का ओजस्वी उद्बोधन भी हुआ जिसमें स्वामी जी ने विश्व बंधुत्व एवं वसुधैव कुटुम्बकम् की भावना को मजबूत बनाने का आह्वान किया। उन्होंने कहा कि वेद में सम्पूर्ण मानव जाति के कल्याण की भावना विद्यमान है। वेद में संकीर्णता एवं वैमनस्य का कोई स्थान नहीं है। स्वामी आर्यवेश जी ने नगरवासियों का आह्वान किया कि वे आर्य समाज से जुड़कर अपने राष्ट्र को मजबूत बनाने एवं विश्व गुरु के गौरव को प्राप्त कराने में समर्पण भाव से कार्य करें।

सायं कालीन सत्र में वेद और पर्यावरण विषय पर विचारणीय सम्मेलन आयोजित हुआ, जिसकी अध्यक्षता नई दिल्ली से पधारे वैदिक विद्वान "वेद श्री" आचार्य वेद प्रकाश श्रोत्रिय जी ने की।

शेष पृष्ठ 7 पर

सम्पादक - प्रो. विट्ठलराव आर्य

नारी देवता के समान है

– श्री हरिश्चन्द्र वर्मा 'वैदिक'

शास्त्रों में कहा गया है – यत्र नार्यस्तु पूज्यंते रमन्ते तत्र देवता (मनु:) जहाँ स्त्रियों की पूजा अर्थात् मान-सम्मान होता है वहाँ देवता भी प्रसन्न होते हैं। नारियों का कहीं भी, किसी भी अवस्था में, असम्मान नहीं होने देना चाहिए। जैसे आप अपनी बहन बेटियों की इज्जत और मान करते हैं वैसे ही दूसरों की भी बहन बेटियों की इज्जत करनी चाहिए।

किसी भी नारी का अपमान, उससे छेड़खानी, उसका बलात्कार उसकी हत्या आदि महा अपराध कभी नहीं करने चाहिए। युवा विद्यार्थियों को चाहिये कि किसी को कुदृष्टि से न देखें। बालिका विद्यार्थियों को यदि कोई तंग करता है तो उसे रोकना चाहिए। अत: अपने विद्यार्थी जीवन को भद्रतामय बनावें।

विद्यार्थी जीवन विद्याध्ययन के लिए होता है न कि मस्तान बनकर कुकर्म के लिए। जो पुरुष नारियों को तंग करते हैं, जो राजनीति करते हैं, जो नशा करते हैं, जो सिनेमा जैसा मारपीट करते हैं, वे परीक्षा में उत्तीर्ण नहीं हो सकते।

कहने की कोई आवश्यकता नहीं कि वैदिक शिक्षा के अभाव से जो सभ्यता चलचित्रों आदि के द्वारा युवावर्ग को प्राप्त है, उसकी परीक्षा अधिकांश नवयुवक, युवतियों को देखकर ही जान सकते हैं किन्तु ऐसी सभ्यता जिसकी मांग केवल अर्थ और विलासिता है, उनसे एवं उनकी सन्तति की उस शिक्षा से देश की बिगड़ती हुई किसी कड़ी में कभी सुधार नहीं हो सकता।

आजकल हमारे देश में जो शिक्षा प्रणाली प्रचलित है वह केवल मस्तिष्क विकास के उद्देश्य को लेकर चलती है, उसमें न तो शारीरिक विकास का कोई स्थान है और न हृदय की भावनाओं के विकास के लिए। यही कारण है कि हमारे अधिकांश नवयुवक 'बी.ए.' तक पहुँचते-पहुँचते अपना स्वास्थ्य और चरित्र, तेज और ओज, सब खो बैठते हैं। फिर दूसरी ओर नशा के अतिरिक्त गन्दे अश्लील गीतों, नंगे चित्रों से सुसज्जित सिनेमा का प्रचार इतना बढ़ रहा है कि उससे हमारा सामाजिक वातावरण पूर्ण रूपेण दूषित हो चुका है। इन सबका प्रभाव नवयुवकों पर सबसे अधिक पड़ रहा है।

स्व. पुरुषोत्तम दास जी लिखते हैं कि –

''टी. वी. फिल्मों व विज्ञापनों द्वारा भारत के हर ग्राम, कस्बों में 24 घंटे निरन्तर फैलाई जा रही मॉडल, सुन्दरी प्रतियोगिता व कला, डांस के नाम पर कमर, कूल्हे व वक्षस्थलों को मटकाने व उनका प्रदर्शन तथा पॉप डान्स की यौन उन्मादी अपसंस्कृति को यदि न रोका गया तो यौन उत्तेजना के वेग में छोटी बच्ची से लेकर सबालिकाओं तक का व्यापक बलात्कार, हत्या, डकैती व बढ़ते अपराधों को कोई भी सरकार या पुलिस न केवल रोकने में असमर्थ होगी बल्कि भारत की गौरवशाली युवाशक्ति व भारत की अपनी विशिष्ट आदर्श मातृत्व, शीलपूर्ण महिला चरित्र भी लुप्त हो जावेगी एवं हर परिवार की अन्दरूनी सुरक्षा विक्षिप्त होने लग जावेगी।''

इसके अलावा आज डांस के नाम पर एक्सरसाइज और सरकस जैसे कलाकारों ने अपनी-अपनी कला का प्रदर्शन जो कर रहे हैं क्या उससे उन सबका चरित्र का निर्माण हो सकता है, जब छोटी-छोटी बालिका जो अभी से फिल्मी गानों के धुनों पर अपने अंगों को मटकाने लगी है तो वे बड़ी होने पर क्या करेंगी? क्या वे आदर्श गृहिणी बन पायेंगी।

आज ऐसा समय आ गया है कि कोई भी युवती एकाकी कहीं जा नहीं सकती। इस विलासिता पूर्ण युग में चलचित्र का भी पूरा प्रभाव पड़ रहा है। कॉलेज के छात्र-छात्राएँ परस्पर प्रेम करते हैं। (प्रेम करना अनुचित नहीं है, किन्तु लड़कियाँ, लड़कियों के साथ और लड़के-लड़कों के साथ बन्धुत्व करें) लड़कियों को सोचना चाहिए कि मेरा गठन लड़कों से भिन्न है – अत: स्वयं को मेकअप कर अर्धनग्न परिधान से बाहर न निकलें, इससे युवाओं का मन विचलित हो सकता है, जवानी अन्धी होती है यदि वे वशीभूत हो गई तो उनकी मान प्रतिष्ठा नष्ट हो जायेगी, फिर वह कलंक छिपाये नहीं छिपता, औषधियों का प्रयोग भले ही किया जाये किन्तु वह अपने आप आदर्श से गिर जाती है।

लड़कियाँ अपने नारीत्व को बनाने की अपेक्षा बिगाड़ रही हैं, प्राकृतिक रूप से जवानी तो उत्तेजक है ही, तदुपरान्त खाद्य (माँस, मुर्गा, डीम) भी खाती हैं (और कुछ नशापान भी करती हैं) ऐसे में भला वह कैसे अपने को नियंत्रण में रख सकती है। सिनेमा में जो सीन दिखलाई जाती है वह एक दिखावा है, किन्तु शिक्षित होते हुए भी ना समझी की जाती है, उस अभिनय को अपने में ढालने लगती है, इसी प्रकार युवक भी करते हैं। अत: नवयुवक और नवयुवतियों को चाहिए कि वे अपने को सुधारें अन्यथा उनका वैवाहिक जीवन दु:खमय बन जायेगा।

जो पति अपनी पत्नी की अवहेलना करके किसी दूसरी नारी के यहाँ जाता है अथवा नशा शराब पान करता है, वह पति कहलाने योग्य नहीं है, वह गिरा हुआ अधर्मी है, वह अपने परिवार को दु:खमय बना देता है। किन्तु ऐसा नहीं होना चाहिए, अत: ऐसा कर्म करना चाहिए ताकि सब कोई श्रद्धाभाव से देखें। जिस प्रकार पत्नी के लिए पति पूजनीय है उसी प्रकार पति के लिए पत्नी पूजनीय है। ऐसा मैत्री भाव संगठन परस्पर वृद्धावस्था तक होना चाहिए।

यदि विवाहित पत्नी के गर्भ में (अल्ट्रासोनोग्राफी द्वारा) कन्या है तो उसका गर्भपात, भ्रूण हत्या जैसे पाप नहीं करने चाहिए। वंश चलाने के लिए ऐसी हत्या अपराध है। इसी वंश को चलाते-चलाते आज भारत की जनसंख्या, 1 अरब 21 करोड़ से अधिक हो गई है, जिनमें पुरुषों से नारियों की संख्या कम रह गई है, अत: प्राकृतिक संतुलन को बिगाड़ दिया गया है। इसके अलावा दहेज की प्रथा से अधिकतर नारी को अग्नि में भस्मीभूत किया जा रहा है। किसी को विष दे दिया जाता है, तो किसी को ताना मार-मार कर उसे मानसिक कष्ट दिया जा रहा है। तात्पर्य यह कि अपनी अर्धांगिनी पर अत्याचार मत कीजिए। दूसरी नारियों को अपनी माँ, बहन और भगिनी के रूप में देखिये। बलात्कार करने वाले पुरुष अन्धे होते हैं, उन्हें क्षमा न किया जाये। ऐसे लोगों को कठोर दण्ड मिलना चाहिए।

नारियों को कुदृष्टि से देखने वाले और अपहरण करने वाले को कानून और समाज कठोर दण्ड दे।

जो परिवार पौराणिक विचार को होते हैं उनके घर में यदि कोई विधवा हो जाये, तो परिवार वाले उसे कुलक्षणी कमाने लगते हैं। यदि लड़की जन्म ली तो परिवार शोक मग्न हो जाता है। यदि शिशु जन्म लेने के बाद मर जाता है तो उसका सारा दोष पत्नी पर आ जाता है, सास कहती है कि ये बच्चे को खा गई, यह कितना अन्याय है। इसी प्रकार विधवा की भी दुर्दशा की जाती है। किसी शुभकार्य में उसे सम्मिलित नहीं होने दिया जाता। उसे परिवार के लोग बराबर ताना मारते रहते हैं। उसकी सारी खुशियों को नष्ट कर दिया जाता है। परिवार में उसका कोई कदर नहीं किया जाता। वाह रे विचार! यदि पति मर जाता है तो उस मृत्यु का कारण उसकी पत्नी पर थोप दिया जाता है और यदि पत्नी मर गई तो पुरुष को कोई कुछ नहीं बोलता। जब वह अपने पति की अर्धांगिनी है तो नीति के अनुसार पति का जो कुछ था उसका उन सब पर आधे का अधिकार हो जाता है। जब पत्नी के मर जाने पर विधुर पति विवाह कर सकता है तो पति के मर जाने पर विधवा पत्नी क्यों नहीं विवाह कर सकती। विधवा का विवाह न हो इस वेद विरुद्ध प्रथा को इन ब्राह्मणों के पूर्वजों ने चलाया है। वेद में साफ आज्ञा है, यदि विधवा युवती है और यदि वह विवाह की इच्छुक है – तो वह शादी कर सकती है।

आज सभी शिक्षित नारी को उचित है कि वैदिक धार्मिक शास्त्रों का अध्ययन करें और अपने पुत्र-पुत्रियों को अच्छे संस्कार से पालन-पोषण करें।

– मु. पो.-मुरारई, जिला-वीरभूम, पश्चिम बंगाल

वेदों में मानवीय तत्व

– डॉ. भीम सिंह

संस्कृत वाङ्मय बहुत विशाल है। भाषिक विशेषताओं के कारण इसको विद्वानों के द्वारा प्रमुख रूपेण दो भागों में विभक्त किया जाता है–वैदिक संस्कृत तथा लौकिक संस्कृत। विण्टरनिट्स के अनुसार इस भेद का आधार आचार्य पाणिनि हैं अर्थात् जो साहित्य पाणिनि से पहले लिखा गया, वह वैदिक साहित्य कहलाता है तथा जो साहित्य पाणिनि के बाद पाणिनिव्याकरण को ध्यान में रखकर लिखा गया, वह लौकिक संस्कृत साहित्य कहलाता है। यों तो सारा संस्कृत वाङ्मय ही **''सर्वे भवन्तु सुखिनः, सर्वे सन्तु निरामयाः। सर्वे भद्राणि पश्यन्तु, मा कश्चिद् दुःखभाग् भवेत्।।** इस मानवीय दर्शन से ओतप्रोत है; क्योंकि संस्कृत किसी धर्म–विशेष, जाति–विशेष, लिंग विशेष या वर्ग–विशेष की भाषा न होकर मानवमात्र की सांस्कृतिक भाषा है जैसा कि वेद में कहा गया है –

''यथेमां वाचं कल्याणीमावदानि जनेभ्यः। ब्रह्मराजन्याभ्यां शूद्राय चार्याय च स्वाय चारणाय। प्रियो देवानां दक्षिणायै दातुरिह भूयासमयं मे कामः समृध्यतामुपमादो नमतु।।''१

फिर भी प्रस्तुत निबन्ध में केवल वैदिक साहित्य प्रसंग में कुछ उदात्त मानवीय आदर्शों की चर्चा की जाएगी। अस्तु,वैदिक संस्कृति के अनुसार मनुष्य–मनुष्य में कोई भेद नहीं है। वे सभी अमृत के पुत्र हैं–**''श्रृण्वन्तु सर्वे अमृतस्य पुत्राः आयो धामानि दिव्यानि तस्थुः।''२** वेदों में जहां भी जब भी किसी वस्तु का वर्णन होता है, वहां देशकाल की संकीर्ण सीमाओं से ऊपर उठकर मनुष्यमात्र के स्वस्तिवाचन या कल्याण के लिए कामना की गई है, जैसे सर्वप्रथम देव, राजा, शूद्र तथा आर्य सभी प्रकार के मनुष्यों का प्रिय बनने के लिए अथर्ववेद में प्रार्थना करते हुए कहा गया है –

प्रियं मा कृणु देवेषु प्रियं राजसु मा कृणु।
प्रियं सर्वस्य पश्यत उत शूद्रे उतार्ये।।''३

इसी तरह समाज के सभी वर्गों में प्रेम धारण करने के लिए वेदों में परमात्मा की स्तुति की गई है–

''रुचं नो धेहि ब्राह्मणेषु रुचं राजसु नस्कृधि।
रुचं विश्येषु शूद्रेषु मयि धेहि रुचा रुचम्।।''४

इसी तरह सभी प्रत्यक्ष एवं परोक्ष भूतों की सुमति में बने रहने के लिए वेद कहता है–

''यांश्च पश्यामि यांश्च न तेषु मा समुतिं कृधि।''५

यजुर्वेद में विवाचस् तथा नानाधर्मा६ सब मनुष्यों में एक ही आत्मा का दर्शन करते हुए ऋषि कहता है–

यस्तु सर्वाणि भूतान्यात्मन्नेवानुपश्यति।
सर्व भूतेषु चात्मानं ततो न विचिकित्सति।
यस्मिन् सर्वाणि भूतान्यात्मैवाभूद्विजानतः।
तत्र को मोहः कः शोकः एकत्वमनुपश्यतः।।७

अर्थात् जो पुरुष सब जड़–चेतन पदार्थों को अपने समान ही परमात्मा पर आश्रित मानता है, दूसरे शब्दों में सब पदार्थों को परमात्मा में और सब पदार्थों में परमात्मा को व्याप्त मानता है, वह कभी विचिकित्सित नहीं होता। इसी प्रकार जब पुरुष को सब जीव अपने ही समान दिखने लगते हैं, उस सर्वत्र एकता या समानता को देखने वाले आत्मज्ञानी पुरुष को फिर कौन–सा शोक और मोह रह सकता है। वास्तव में समस्त मानव तथा अन्य भूतजात भिन्न–भिन्न होते हुए भी आत्मरूपेण एक ही हैं, इसलिए अथर्ववेद में कहा गया है–**''यत्र विश्वं भवत्येकरूपम्।''८** सर्वत्र एक ही आत्मतत्त्व के दर्शन करने कराने वाला यह वैदिक उद्घोष ही महाभारत में महर्षि वेदव्यास ने निम्न प्रकार से पुनरुद्घोषित किया है–

'श्रूयतां धर्मसर्वस्वं श्रुत्वा चैवावधार्यताम्।
आत्मनः प्रतिकूलानि परेषां न समाचरेत्।।''९

सारा वैदिक साहित्य सबसे पहले मनुष्य को मनुष्य बनने पर जोर देता है–

''तन्तुं तन्वन् रजसो भानुमन्विहि ज्योतिष्मतः
पथोरक्ष धिया कृतान्।
अनुल्वणं वयत जोगुवामपो मनुर्भव जनया
दैव्यं जनम्।।''१०

वैदिक चिन्तन भेदभावमूलक या मनुष्य–मनुष्य में भेद मानने वाला नहीं है। इसलिए यहां कोई किसी पर अन्याय या अत्याचार करने की भी नहीं सोचता–

''यत्र शुल्को न क्रियते अबलेन बलीयसे।''११

वैदिक ज्ञान तो प्राणिमात्र की प्रगति में समाज की उन्नति मानता है–

असि दभ्रस्यचिद् वृधः१२

वास्तव में वैदिक विचारधारा सबको संगठित करने वाला दर्शन है। इसलिए वहां सब मनुष्यों को साथ चलने, साथ बोलने और सदा संगत रहने की प्रार्थना की गई है। वैदिक दृष्टि व्यष्टि से समष्टि की ओर जाने वाली है। ऋषि का विचार है कि यदि सभी के विचार और ह्रदय समान नहीं होंगे तो समाज में कभी शान्ति नहीं होगी और सब अच्छी प्रकार एक साथ नहीं रह सकते; जैसे–

''संगच्छध्वं संवदध्वं सं वो मनांसि जानताम्।
देवाभागं यथा पूर्वे सं जानाना उपासते।१३
समानि व आकूतिः समाना ह्रदयानि वः।
समानमस्तु वो मनोः यथा व सुसहासति।।''१४

वैदिक विचारधारा तो एक ऐसे विश्व की कल्पना करती है जो भेदभाव से ऊपर उठकर एक समान नीड़ वाला हो, जैसे–

वेनस्तत् पश्यन्निहितं गुहा सद यत्र विश्वं भवत्येकनीडम्।
यस्मिन्निदं सं चवि चैति सर्व ओतः प्रोतश्च विभूः
प्रजासु।।''१५

इसलिए सारे विश्व को आर्य बनाने की प्रार्थना यहां की गई है, जैसे–

''इन्द्रं वर्धन्तो अप्तुरः कृण्वन्तो विश्वमार्यम्। अपघ्नन्तो
अराव्णः।''१६

वैदिक ऋषि को इस बात का बहुत पहले ही यह मनोवैज्ञानिक सम्प्रत्यय हो गया था कि शत्रु बाहर से कम आता है अपितु मां का पेट या सहोदर भाई ही एक समय आने पर शत्रु का रूप ग्रहण कर लेता हैं इसलिए वह साम्मनस्य सूक्त में माता–पिता, पुत्र, भाई–बहन और पत्नी रूप सभी पारिवारिक जनो में अविद्वेष या संगत मन रूप मंगलकामना करते हुए कहता है–

''सहृदयं सांमनस्यमविद्वेषं कृणोमि वः।
अन्यो अन्यमभिहर्यत वत्सं जातमिवाध्न्याः।।
अनुव्रतः पितुः पुत्रो मात्रा भवति संमनाः।
जाया पत्ये मधुमतीं वाचं वदतु शान्तिवाम्।।''
''मा भ्राता भ्रातरं द्विक्षन् मा स्वसारमुत स्वसा।
सम्यञ्चः सव्रता भूत्वा वाचं वदत भद्रया।।''१७

वैदिक दृष्टि तो इतनी उदार है कि वह तो छोटे–बड़े सभी के लिए एक ही पानीयशाला तथा भोजनशाला चाहती है, जैसे–

समानी प्रपा सह वोऽन्नभागः समाने योक्त्रे सह वो युनज्मि।
सम्यञ्चोऽग्निं सपर्यतारा नाभिमिवाभितः।।१८
''सध्रिश्च में सपीतिश्च में।''१९
''आयुष्मन्तः सहभक्षाः स्याम।''२०

परिवार, समाज या राष्ट्र को सुसंचालित करने के लिए सभी वर्गों में मित्रभाव होना अत्यन्त आवश्यक है। मित्रभाव होने से समाज का प्रत्येक वर्ग राष्ट्र की उन्नति या अवनति में अपने आपको उत्तरदायी मानता है। इसी भाव की दृष्टि से यजुर्वेद में कहा गया है कि सबको मित्र की दृष्टि से देखूं, सब मुझे मित्र की दृष्टि से देखें और परस्पर सब एक दूसरे को मित्र की दृष्टि से देखें, जैसे–

''दृते दृहं मा मित्रस्य मा चक्षुषा सर्वाणि भूतानि समीक्षन्ताम्। मित्रस्याहं चक्षुषा सर्वाणि भूतानि समीक्षे। मित्रस्य चक्षुषा समीक्षामहे।''२१

जहां मित्रभाव होता है, वहां शत्रु या भय नाम की कोई वस्तु नहीं होती। मनुष्य के सर्वांगीण विकास के लिए वैदिक चिन्तन सर्वतः अभय को अत्यावश्यक मानते हुए कहता है कि मुझे आगे से भय न हो, मुझे पीछे से भय न हो, मुझे ऊपर से भय न हो, मुझे नीचे से भय न हो, मुझे मित्र से भय न हो, मुझे अमित्र से भय न हो, मुझे दिन में भय न हो और मुझे रात्रि में भय न हो। इस प्रकार सारी दिशाएं मेरी मित्र हों, जैसे –

''अभयं न करत्यन्तरिक्षमभयं द्यावापृथिवी उभे इमे।
अभयं पश्चादभयं पुरस्तादुत्तरादधरादभयं नो अस्तु।।
अभयं मित्रादभयममित्रादभयं ज्ञातादभयं परोक्षात्।
अभयं नक्तमभयं दिवा नः सर्वा आशा मम मित्रं भवन्तु।।''२२

वेदों की उदात्त भावना का इससे बड़ा निदर्शन और क्या होगा कि वहां दुराग्रह से मुक्त होकर शत्रु–मित्र सभी की अच्छी बातों को ग्रहण करने का उपदेश दिया गया है–

''आ नो भद्राः क्रतवो यन्तु विश्वतोऽदब्धासोऽपरीतास
उद्भिदः।
देवा नो यथा सदमिद्वृधेऽसन्नप्रायुवो रक्षितारो दिवे
दिवे।।''२३

वैदिक ऋषि भूमि और मनुष्यों को खण्डों में न बांटकर सर्वत्र एकत्व का अनुभव करते हुए कहता है कि यह भूमि मेरी माता है और मैं इसका पुत्र हूं, **''माता भूमिः पुत्रोऽहं पृथिव्याः।''** हम राष्ट्र में जागने वाले पुरोहित हैं–**''वयं राष्ट्रे जागृयाम पुरोहिताः।''२५** यह तो आज की संकीर्ण दृष्टि है जो हमने मानव–मानव में और भूमि–भूमि में अपने स्वार्थों के कारण भेदभाव पैदा कर दिया हैं वेद तो इन भेद–भावों से ऊपर है। अतः वहां मानवमात्र के भले की प्रार्थना करते हुए कहा गया है कि हे सविता देव ! जो भद्र या भला करने वाली वस्तुएं हैं, उन्हें हमें प्रदान कीजिए और जो दुरित या बुरी चीजें हैं, उनको हमसे दूर कर दीजिए– **''विश्वानि देव सवितर् दुरितानि परासुव। यद् भद्रं तन्न आसुव।''१६** इस देश में धन के संग्रह को महत्त्व नहीं दिया गया है। हम बुद्ध या दयानन्द को इसीलिए नहीं पूजते हैं कि उनके पास बहुत धन था, अपितु इसलिए पूजते हैं कि जो कुछ उनके पास था, वह सब उन्होंने मानवमात्र के भले के लिए त्याग दिया। इसलिए संग्रह के स्थान पर त्याग को रेखांकित करते हुए ऋषि कहता है–

ईशा वास्यमिदं सर्वं यत्किञ्च जगत्यां जगत्।
तेन त्यक्तेन भुञ्जीथा मा गृधः कस्यस्विद्धनम्।।२७

मनुष्यों के बंध और मोक्ष का कारण मन ही होता है। यदि मन अच्छे विचारों वाला हो तो मुनष्य कहीं से कहीं जा सकता हैं इसलिए वेदों में मन को शिवसंकल्प वाला करने के लिए प्रार्थना करते हुए कहा गया है।

यज्जाग्रतो दूरमुदैति दैवं तदु सुप्तस्य तथैवैति।
दूरङ्गमं ज्योतिषां ज्योतिरेकं तन्मे मनः शिवसंकल्पमस्तु।।
यस्मिन्नृचः साम यजूंषि यस्मिन् प्रतिष्ठिता रथनाभाविवाराः।
यस्मिंश्चित्तं सर्वमोतं प्रजानां तन्मे मनः शिवसंकल्पमस्तु।।२८

वेद का तो प्रत्येक अक्षर निगूढाशय और उपदेशप्रद है। यह बात अलग है कि हम वेद के उस अन्तर्निहित भाव को समझ सकें या नहीं। इस विषय में प्रजापति के द्वारा देव, मानव और असुरों को एक ही अक्षर दकार के द्वारा उपदेश दिया जाना सर्वविदित ही है। आश्चर्य है कि कैसे एक ही द अक्षर से दमन, दान और दया का उपदेश दिया गया है। सम्भवतः भाष्यकार पतञ्जलि ने भी इसी दृष्टि से यह कहा था–**''एकः शब्दः सम्यग् ज्ञातः सुप्रयुक्तः स्वर्गे लोके च कामधुग् भवति।''२६** वेदों में सदा ही श्रेष्ठ मनुष्यों के पास जाकर उनसे शिक्षा लेते हुए उठने और जागने का उपदेश दिया गया है–

''उत्तिष्ठत जाग्रत प्राप्य वरान्निबोधत'' तथा **''यान्यस्माकं सुचरितानि तानि त्वत्योपास्यानि नो इतराणि।''३०**

वेदों में लौकिक वस्तुओं के महत्त्व को स्वीकार करते हुए भी उन्हें अधिक महत्त्व नहीं दिया गया है अपितु उन्हें श्वोभाव कहा गया है।

श्वोभावा मर्त्यस्य यदन्तकैतत् सर्वेन्द्रियाणां जरयन्ति तेजः
अपि सर्वं जीवितमल्पमेव तवैव वाहास्तव नृत्यगीते।''३१

इसलिए वहां प्रेयमार्ग की अपेक्षा श्रेयमार्ग अधिक प्रशस्य माना गया है तथा सदा अच्छे कर्म करने पर जोर दिया गया है; क्योंकि अगला जन्म यथाश्रुत और कर्मानुग होता है।

''योनिमन्ये प्रपद्यन्ते शरीरत्वाय देहिनः।
स्थाणुमन्येऽनुसंयन्ति यथाकर्म यथाश्रुतम्।।३२

वेद की दृष्टि से सब मानव एक समान हैं इसलिए वह किसी को विशेष आरक्षण देने की बात नहीं करता। वैदिक मान्यता के अनुसार तो यह कहा जाता है कि यदि ब्राह्मण और शूद्र दोनों के द्वारा एक समान अपराध किया जाता है तो ब्राह्मण को अधिक दण्ड मिलेगा और शूद्र को कम; क्योंकि ब्राह्मण को कर्त्तव्य–अकर्त्तव्य का ज्ञान है। अतः उसका अपराध अक्षम्य है जबकि शूद्र को ज्ञान न होना उसका रक्षाकवच है। परन्तु आज का न्याय गोयूथ न्याय से सबको एक डण्डे से हांकता है।

''सा प्रथमा संस्कृतिर्विश्ववारा''३३ इस वेदवचनानुसार यह विश्ववरणीय सर्वप्रमुख वैदिक संस्कृति ही है जो समग्र राष्ट्र के मंगल के लिए समन्वित प्रार्थना करते हुए है –

''आ ब्रह्मन् ब्राह्मणो ब्रह्मवर्चसी जायताम्। आ
राष्ट्रे राजन्यः शूर इषव्योऽति व्याधिर्महारथो जायताम्।
दोग्ध्री धेनुर्वोढाऽनड्वानाशुः सप्तिः पुरन्धिर्योषा जिष्णू
रथेष्ठाः सभेयो युवास्य यजमानस्य वीरो जायताम्।
निकामे निकामे नः पर्जन्यो वर्षतु। फलवत्यो न
ओषधयः पच्यन्ताम्। योगक्षेमो नः कल्पताम्।''३४

वास्तव में वैदिक संस्कृति के अनुसार तो यह विश्व एक ऐसा अभयारण्य है जहां छोटे–बड़े सभी प्रकार के जीव यथेच्छ विहार करने का अधिकार रखते हैं।

मा नो द्विक्षत कश्चन३५ तथा **पुमान् पुमांसं परिपातु विश्वतः** यह इसका मौलिक सिद्धान्त हैं। मानवीय मूल्यों की स्थापना की दृष्टि से वैदिक संस्कृति अद्वितीय स्थान है। **''वसुधैव कुटुम्बकम्''३७** इस सुभाषित द्वारा वैदिक संस्कृति ही प्रतिध्वनित होती है। वर्तमान में सबसे बड़ा संकट मानवीय मूल्यों के विघटन का संकट है। जब तक वेदोक्त मानवीय मूल्य जीवित थे तब तक यह देश शताब्दियों तक पराधीन रहकर भी जीवित रहा जिसका अनुमोदन मनु के निम्न श्लोक से होता है–

''एतद्देशप्रसूतस्य सकाशादग्रजन्मनः।
स्वं स्वं चरित्रं शिक्षेरन् पृथिव्यां सर्वमानवाः।।३८

परन्तु अब टी.वी. संस्कृति के द्वारा जिस प्रकार से मानवीय मूल्यों का ह्रास किया जा रहा है इसको देखते हुए यह सर्वथा असम्भव नहीं लगता कि कहीं यह देश राजनैतिक दृष्टि से स्वतन्त्र होकर भी मानवता की दृष्टि से अस्तित्वहीन न हो जाए या अपना प्राचीन विश्वगौरव न खो बैठे। इसलिए आज समय की सबसे बड़ी आवश्यकता है कि एक बार पुनः वैदिक मानवीय मूल्यों की स्थापना की जाए।

●

आर्य कन्या गुरुकुल शिवगंज, राजस्थान का रजत जयन्ती समारोह

दिनांक 27, 28 एवं 29 अक्टूबर, 2023 की तिथियों में उत्साहपूर्ण वातावरण में मनाया गया

देश के मूर्धन्य संन्यासी, विद्वान्, आचार्य/आचार्या एवं भजनोपदेशकों ने विभिन्न सम्मेलनों को किया सम्बोधित

राजस्थान की पावन पुण्य धरा पर स्थित आर्य कन्या गुरुकुल शिवगंज का रजत जयन्ती समारोह दिनांक 27 से 29 अक्टूबर, 2023 की तिथियों में भव्यता के साथ मनाया गया। इस रजत जयन्ती समारोह का शुभारम्भ आध्यात्मिक शिविर व यज्ञ से हुआ। यज्ञ का ब्रह्मत्व आचार्या डॉ. सूर्यादेवी जी ने किया। यज्ञीय मन्त्रों का सस्वर वेदपाठ गुरुकुल की ब्रह्मचारिणियों द्वारा किया गया। तत्पश्चात् परोपकारिणी सभा के आचार्य मुनि सत्यजित् जी ने आचार्याद्वय के तप, त्याग को देखकर गुरुकुल के उज्ज्वल भविष्य की कामना करते हुये उद्बोधन दिया। इसके पश्चात् यज्ञ के ब्रह्मा आचार्या जी ने अग्निमीळे मन्त्र की व्याख्या करते हुये कहा कि जीवन में उन्नति प्राप्त करने के लिये अग्नि की आवश्यकता है।

यज्ञोपरान्त ध्वजारोहण का कार्य सीकर के सांसद स्वामी सुमेधानन्द जी, परोपकारिणी सभा के महामन्त्री मुनि सत्यजित् जी, श्री विनय आर्य आदि के द्वारा किया गया। ध्वाजोत्तोलन के बाद ब्रह्मचारिणियों ने ध्वजगान गाया गया।

समारोह के प्रथम सत्र की अध्यक्षता राष्ट्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय के कुलपति जी.एस.आर. कृष्णमूर्ति, मुख्यातिथि सुमेधानन्द जी, लोकसभा एडिटर सत्यव्रत जी, मुनि सत्यजित् जी दयानन्द चेयर के अध्यक्ष नरेश धीमान् जी, आचार्या अन्नपूर्णा जी संचालक नीरज शास्त्री मथुरा आदि ने अपने विचार प्रस्तुत किये।

द्वितीय सत्र की अध्यक्षता अमेठी उ.प्र. से पधारे डॉ. ज्वलन्त कुमार शास्त्री ने की तथा संचालन बहन श्रुति कीर्ति जी ने किया। सम्मेलन को सम्बोधित करने वालों में ब्र. सौम्या, गुरुकुल नजीबाबाद की आचार्या डॉ. प्रियम्वदा वेदभारती, कल्याणी जी आदि प्रमुख रहे।

तृतीय सत्र की अध्यक्षता आचार्या अन्नपूर्णा जी (द्रोणस्थली) ने की तथा संचालन ब्र. सुनीति आर्या एवं मीनाक्षी आर्षविद्यामणि ने किया। डॉ. आरती शर्मा एल.बी.एस. शिक्षाशास्त्र विभाग प्राध्यापक ने मुख्य आतिथ्य ग्रहण किया। इनका स्वागत अभिनन्दन गुरुकुल की मन्त्राणी अरुणा नागर, सदस्या लीलावती जी ने किया।

द्वितीय दिवस के प्रथम सत्र 'धर्म सम्मेलन' की अध्यक्षता स्वामी आर्यवेश जी ने की तथा संचालन आचार्य धनंजय जी ने किया। इस सत्र में डॉ. शिवकुमार आर्य, ब्यावर से पधारे भजनोपदेशक अमरसिंह जी ने सुन्दर भजनों की प्रस्तुति दी। सत्र के दौरान स्वामी आर्यवेश जी का समस्त गुरुकुल के न्यासीगणों ने स्वागत अभिनन्दन किया तथा डॉ. ज्वलन्त कुमार जी, डॉ. प्रशस्य मित्र जी, आर्ष गुरुकुल होशंगाबाद के आचार्य योगेन्द्र याज्ञिक जी, वैदिक विदुषी डॉ. प्रियम्वदा वेदभारती जी, आर्य वीरांगना दल की अध्यक्षा साध्वी उत्तमा यति जी, तिरुपति विश्वविद्यालय के कुलपति मान्य जी.आर. एस. कृष्णमूर्ति, पं. भूपेन्द्र आर्य जी, दयानन्द पीठ के अध्यक्ष नरेश धीमान् जी, डॉ. प्रतिभा पुरन्धि जी, आचार्या अन्नपूर्णा जी, डॉ. निधि, डॉ. सरस्वती, डॉ. चेतना विभूति, डॉ. एम. सविता, सविता लोहिया जी, श्रुतिकीर्ति जी, डॉ. ऋचा शास्त्री जी, श्री कन्हैयालाल आर्य जी, अमरसिंह जी आदि आर्य विद्वत्जन एवं महानुभावों का स्वागत एवं अभिनन्दन गुरुकुल के न्यासीगणों द्वारा किया गया। तथा विद्वत्जनों द्वारा आचार्या डॉ. सूर्यादेवी जी चतुर्वेदा एवं डॉ. धारणा याज्ञिकी जी का सम्मान किया गया।

द्वितीय सत्र शिक्षा सम्मेलन की अध्यक्षता श्री नरेश धीमान् जी द्वारा की गई। इसके मुख्य अतिथि अग्निव्रत नैष्ठिक जी रहे।

तृतीय सत्र की अध्यक्षता श्री जीव वर्धन जी ने की तथा संचालन युवा विद्वान् श्री योगेन्द्र याज्ञिक जी द्वारा किया गया।

तृतीय दिवस का आरम्भ ब्रह्मयज्ञ के साथ हुआ। 25 ब्रह्मचारिणियों का दीक्षान्त होने से पृथक्–पृथक् 25 वेदियों का निर्माण किया गया। मुख्य वेदी पर किशनलाल जी गहलोत सपत्नीक, आचार्य ज्ञानप्रकाश जी सपत्नीक तथा गुरुकुल के सदस्य कन्हैयालाल आर्य जी थे। विशिष्ट आहुतियों द्वारा ब्रह्मचारिणियों ने यज्ञ सम्पन्न कराया।

अल्पाहार के बाद मंचीय कार्यक्रम प्रारम्भ हुआ जिसमें सर्वप्रथम आचार्या डॉ. सूर्यादेवी चतुर्वेदा जी द्वारा नवस्नातिकाओं को अग्रिम जीवन हेतु शिक्षायें दी गईं और ब्रह्मचारिणियों ने भी संकल्प लिया कि हम अपना अग्रिम जीवन ऋषि मुनियों द्वारा निर्मित जीवनशैली से युक्त होकर जियेंगी।

अन्त में गुरुकुल की आचार्या डॉ. सूर्यादेवी चतुर्वेदा जी एवं आचार्या डॉ. धारणा याज्ञिकी जी ने समस्त अभ्यागतवृन्द, अतिथि, विद्वत्जनों एवं कार्यकर्ताओं का हृदय से आभार व्यक्त किया तथा गुरुकुल पौन्धा देहरादून से 50 ब्रह्मचारियों के साथ पधारे आचार्य डॉ. धनंजय जी एवं श्री चन्द्रभूषण शास्त्री का विशेष धन्यवाद करते हुये कहा इन बच्चों ने अपना गुरुकुल समझकर कार्यक्रम को सुसम्पन्न कराने में विशेष भागीदारी निभाई। उन्होंने कहा कि यह विशाल महा आयोजन इतना बड़ा भव्य कार्यक्रम जो हम सोच नहीं सकते थे। परन्तु आप सभी के सहयोग से भव्यता के साथ सम्पन्न हो पाया।

इस सम्पूर्ण आयोजन की प्रशंसा सभी विद्वानों ने पृथक्–पथक् की और जिनके कारण यह कार्यक्रम सम्भव हो सका, मुख्य सूत्रधार, जिनके चिन्तन, मनन व अहर्निश प्रयत्न से, तार्किक ऊहा, लगन से सम्पूर्ण कार्यक्रम सम्भव हुआ वह शक्ति है सम्पूर्ण भारत के आचार्यत्व का निर्वहन करने वाली, गुरुकुल की आचार्या, प्राणरूपा, स्तम्भ, जिनके निर्णयों ने कार्यक्रम की निरन्तर शोभा बढ़ाई और प्रत्येक प्रस्तुति जिनकी ऊहा, चिन्तन, तार्किक शक्ति का प्रमाण दे रही थी, वह सम्पूर्ण शास्त्रों में निष्णात, ऋषिमनुगता, वैदिक संस्कृति की संरक्षिका, आचार्या डॉ. सूर्यादेवी जी चतुर्वेदा द्वारा ही सम्भव हो सका। सभी अभ्यागतवृन्दों ने उनकी भूरि भूरि प्रशंसाएं की और कहा कि हम सोच भी नहीं सकते थे कि इतना बड़ा आयोजन अपने दम पर कैसे किया जा सकता है? आपने यह किया बहुत महत्त्वपूर्ण है और महिला होकर किया यह अत्यधिक महत्त्वपूर्ण है। बड़े–बड़े लोग ऐसे कार्यक्रम नहीं कर पाते। इस प्रकार कार्यक्रम पूर्ण सफलता के साथ सम्पन्न हुआ।

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी की 200वीं जन्म जयन्ती के उपलक्ष्य में मेरठ में हुआ ऐतिहासिक आर्य महासम्मेलन

महासम्मेलन में आयोजित विशाल शोभा यात्रा अभूतपूर्व रही

मूर्धन्य आर्य संन्यासी स्वामी विवेकानन्द जी ने राष्ट्र यज्ञ के ब्रह्मा पद को सुशोभित किया

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी का राष्ट्र के उत्थान में महत्त्वपूर्ण योगदान है – स्वामी आर्यवेश

मानव निर्माण की संस्कार विधि महर्षि ने बताई – डॉ. सत्यपाल सिंह

वैदिक शिक्षा प्रणाली से ही भारत विश्व गुरु बन सकता है – आचार्य बालकृष्ण

महर्षि दयानन्द सरस्वती विश्व के महान् दार्शनिक एवं वेद वेत्ता थे – डॉ. ज्वलन्त कुमार शास्त्री

स्वतंत्रता आन्दोलन में आर्य समाज की महत्त्वपूर्ण भूमिका रही – स्वामी आदित्यवेश

वैदिक संस्कृति यज्ञीय भावना से ओत-प्रोत है – डॉ. वेदपाल

वेदों में नारी का महत्त्वपूर्ण स्थान है – डॉ. सुमेधा

समस्त ज्ञान-विज्ञान के आदि स्रोत वेद हैं – डॉ. सुकामा

नारी गौरव को पुनः प्रतिष्ठित करने का श्रेय महर्षि दयानन्द जी को है – डॉ. प्रियंवदा

जिला आर्य प्रतिनिधि सभा एवं केन्द्रीय आर्य समिति मेरठ, उत्तर प्रदेश के तत्वावधान में महर्षि दयानन्द सरस्वती जी की 200वीं जन्म जयन्ती समारोह का आयोजन दिनांक 16 से 19 नवम्बर, 2023 तक जीमखाना मैदान (महाराणा प्रताप प्रांगण), मेरठ, उत्तर प्रदेश में अत्यन्त हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। इस चार द्विवसीय सम्मेलन में राष्ट्र यज्ञ का आयोजन किया गया, जिसके लिए एक पारम्परिक एवं वैदिक यज्ञशाला का निर्माण किया गया। आर्य समाज के मूर्धन्य संन्यासी स्वामी विवेकानन्द सरस्वती जी के ब्रह्मत्व में यज्ञ आयोजित किया गया। समारोह की अध्यक्षता स्वामी विवेकानन्द सरस्वती जी ने की तथा समारोह का उद्घाटन सार्वदेशिक सभा के नेता स्वामी आर्यवेश जी तथा सांसद श्री राजेन्द्र अग्रवाल जी द्वारा ओ३म् ध्वज का आरोहण करके किया गया।

इस अवसर पर स्वामी आर्यवेश जी, स्वामी सच्चिदानन्द जी, श्री देवेन्द्रपाल वर्मा, डॉ. ज्वलन्त कुमार शास्त्री के नेतृत्व में एक विशाल शोभा यात्रा मेरठ महानगर में निकाली गई जो अपने आप में ऐतिहासिक रही। इस शोभायात्रा में 15 गुरुकुलों एवं मेरठ के विभिन्न विद्यालयों के हजारों छात्र-छात्राएं सम्मिलित रहे। कन्या गुरुकुल चोटीपुरा की छात्राओं का प्रदर्शन आकर्षक रहा।

शोभा यात्रा में झाकियों के माध्यम से महर्षि दयानन्द जी के जीवन की घटनाओं को प्रदर्शित किया गया।

इस अवसर पर सार्वदेशिक सभा के नेता स्वामी आर्यवेश जी ने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि आज राष्ट्र के सामने अनेक समस्याएं एवं कुरीतियाँ मुंह बाये खड़ी हुई हैं। महर्षि दयानन्द जी ने जिस समय आर्य समाज की स्थापना की थी उस समय भी समाज अनेक कुरीतियों में जकड़ा हुआ था, परन्तु उन्होंने समाज में फैली तमाम कुरीतियों का डटकर मुकाबला किया तथा अनेक सामाजिक कुरीतियों को मिटाने एवं देश को आजाद कराने में अपनी महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई। आज हमें यह कहते हुए गर्व हो रहा है कि मेरठ क्रांति की धरती है, जहाँ पर महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने स्वयं नौ बार आकर लोगों को जागृत किया था। आज हम सब यहां महर्षि दयानन्द सरस्वती जी की 200वीं जन्म जयन्ती के उपलक्ष्य में इक्ट्ठा हुए हैं, इसलिए हम सभी को यह संकल्प लेना चाहिए कि समाज में फैली हुई कुरीतियों को जड़ से उखाड़ फेंकने में अपना तन-मन-धन समर्पण करेंगे और महर्षि के सपनों को साकार करने में प्राण-पण से कार्य करेंगे।

इस चार दिवसीय आर्य महासम्मेलन में कवि सम्मेलन, महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के जीवन पर आधारित प्रदर्शनी, स्वतंत्रता आन्दोलन में स्वामी दयानन्द जी के योगदान का नाट्य रूपान्तरण एवं देश की विभिन्न समस्याओं एवं समाज में फैली हुई कुरीतियों एवं बुराईयों हेतु अनेक स्तर पर आर्य जगत के वरिष्ठ विद्वानों एवं युवा नेताओं तथा गुरुकुल की आचार्यों ने अपने विचार व्यक्त किये। विचार व्यक्त करने वालों में मुख्य रूप से सांसद डॉ. सत्यपाल सिंह, आचार्य बालकृष्ण जी-पतंजलि योग पीठ हरिद्वार, आर्य विद्वान् डॉ. वेदपाल जी, डॉ. ज्वलन्त कुमार शास्त्री, डॉ. सोमदेव शतांशु, युवा संन्यासी स्वामी आदित्यवेश जी, डॉ. सुमेधा, पद्मश्री डॉ. सुकामा आचार्या कन्या गुरुकुल रूढ़की रोहतक, डॉ. प्रियंवदा वेद भारती आचार्या कन्या गुरुकुल नजीबाबाद, डॉ. पवित्रा विद्यालंकार आचार्या कन्या गुरुकुल हाथरस, श्री देवेन्द्र पाल वर्मा, संस्कृति मंत्री ठाकुर जयवीर सिंह, डॉ. वाचस्पति मिश्रा, डॉ. जयेन्द्र आचार्य, ठा. विक्रम सिंह, डॉ. आनन्द कुमार आई.पी.एस., गौतम खट्टर, पंकज मलिक, श्री कपिल, भजनोपदेशक पं. कुलदीप आर्य एवं श्री दिनेश पथिक आदि ने अपने विचार व्यक्त किये। जिला आर्य प्रतिनिधि सभा मेरठ द्वारा आयोजित यह चार दिवसीय कार्यक्रम भव्यता के साथ 19 नवम्बर, 2023 को सम्पन्न हुआ।

The Ennobles the Inner Life of Man

— Ganga Prasad Upadhyaya

"Atonement," says a Christian missionary, "means at-one-ment." The atonement of Jesus Christ for the sins of mankind may or may not be at-one-ment. But at-one-ment is the key-stone of all religiosity. The most typical word for prayer or worship in Sanskrit language is sandhya which means coming together or at-one-ment.

(Sam=together and dha=to put).

The importance of prayer in religion can best be judged by the fact that although prayer is only one of the many functions of religion, in common parlance, both religion and prayer are regarded as congruent in all respects. A man who fulfils all other conditions, but does not pray is called irreligious and a man who only prays and does nothing else is supposed to be the most religious. It is in this sense that mosques, temples and churches are looked upon as God's Houses and their sanctity becomes the paramount duty of the society and the state.

There is no doubt that religion in its true sense covers the whole life of man, omitting nothing that is life and adding nothing that is not life and in this sense every particle of the world is the Abode of God and much more the body in which the inner man resides. But as prayer is meant to colour the whole life of man, past, present and future, it has become the most important of religious duties.

If you want to know what prayer is, you will find several varieties of it in the religious market. A shopkeeper hot-busy with his customers and yet telling the beads of his rosary, this is one variety. A rich money-lender who cannot spare a moment from his worldly engagements hires a priest to recite 'Rama Rama', 'Gayattri' or any other form of God's names and at night goes to bed with a consolation that he has not been quite negligent of life after death. This is another variety. Another rich man gets a voluminous book printed at his cost which contains nothing but the sacred syllable 'Rama Rama' and thinks that as many times the syllable has been printed in all the copies of the book, so many times it has been taken as recited by him. This is the third variety. The Prayer-wheel of the Tibetans which is a big rotary machine to bring out the name of the deity with a great velocity is the fourth form. In these days of scientific inventions it is not difficult to devise a contrivance which could turn out the greatest number of copies of God's name in the least time, at the least cost "and with the least attention. Instead of devoting all twenty-four hours to religious prayers, you can just direct your agent to spend a minute yearly and organise a stupendous system whereby it be possible to get God's name repeated millions of times and to secure for you all the benefits of religious life. The sale of indulgences organised by the Popes of Rome in the time of Martin Luther was a similar type.

But the question is: "Is this all at-one-ment? Is this all prayer ?" It is these types of prayers that have set thinking minds against religion itself. Gautama Buddha was disgusted with the prayers which were in vogue in his times. So was Christ. So was John Wycliff, the morning star of Christian Reformation. So was Luther. And so was Swami Dayanand in his own times. The same disgust is found in the minds of atheists too. They say that religious prayers are not a jot better than the flattery and buffoonery prevalent in the courts of despots. They do not ennoble man's life. They degrade him. They enslave him. They kill all spirituality that nature has put in him. All real prayer ought to be at-one-ment or rising of the soul to God, finding itself near God (उपासना upasana. Up=near, Asana=sitting). You can call it realization of God. It is a mental attitude, not a form. Yajur Veda says: —

"The wise and religious sages apply their mind and intellect to the great and wise God, who and who alone supports and knows all. This (application of mind and intellect) is the best worship of the Great Creator."

Swami Dayanand in his Satyarth-Prakash writes that "whoever says that sugar is sweet does neither obtain the sugar nor its taste,"2 similarly mere recitation of prayers is useless.

It is a very unfortunate thing that many things which were not prayer in the beginning have now come to be regarded as 'prayer proper.' I shall give here two examples. The Azan in a Moslem mosque, as the Arabic word testifies, is only a call to prayer and not prayer itself.

Similarly, the tolling of bells in a Hindu temple or a Christian Church means no more than information to the people that the time for prayer has come and that; they should collect there. But if you closely watch the worshippers, you will find that rites and ceremonies occupy the whole attention of the devotees and people cling to the husk, throwing the inner kernel to dogs. I have often watched the pilgrims hurrying to have a dip in the Ganges, singing religious songs or reciting sacred syllables. I have tried to find what their mental attitude is. I have seen Kirtan Mandlis or singing parties arranged for religious purposes. In ninety-nine per cent cases, I failed to detect any serious religiosity.

I do not mean to say that recitations have no value. Language has its place in the economy of nature and so have recitations in religion. But their utility is limited. As soon as they usurp the place of other factors, they lose their value and become pernicious. Language is a medium of thought and is useful only so far as it conveys thought. It is not impossible to use language without thought. We do it every day. A child utters words and sentences which he does not understand at all. Even adults, and sometimes well-educated adults use words which they do not at all mean. James in his psychology has quoted paragraphs from standard magazines which though beautifully worded convey no sense whatsoever. Herein lies the danger of prayers and recitations. There are many formulas which are altogether meaningless. Some religious preceptors have devised queer syllables for their disciples. They hold that no religion is worth the name unless it is mystified. Therefore, in order to overawe the devotees they make prayers more and more mystic. I think that it is a sheer misuse of prayers as it does not and cannot ennoble the inner life of man.

The real aim of prayers is that the worshipper should internally realize that he is inseparably connected with a cosmic power and that his own life is a part and parcel of a much bigger life—the life of the universe. He has to harmonise his life with that Great Life. He has to feel the unity. All prayers of right type are meant to impress upon the worshipper this reality. Prayers do begin with lip motions, but if they end there, they become harmful. Patanjali, the father of Indian Yoga, says "Recite and meditate."

शुभ सूचना ओ३म् शुभ सूचना

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा प्रकाशित

सत्यार्थ प्रकाश

ऋषिवर दयानन्द सरस्वती द्वारा विरचित
अद्भुत और अनुपम कालजयी ग्रन्थ

1100/— रुपये में उपलब्ध है

सत्यार्थ प्रकाश
बड़े साईज में उपलब्ध

हिन्दी के एक बड़े सत्यार्थ प्रकाश के साथ छोटे साईज का अंग्रेजी का सत्यार्थ प्रकाश मुफ्त में उपलब्ध है।

स्वामी दयानन्द सरस्वती जी द्वारा लिखित कालजयी ग्रन्थ 'सत्यार्थ प्रकाश' को आप अपने आर्य समाज, स्कूल, कॉलेज में रखें तथा इष्ट मित्रों एवं नव-दम्पत्तियों को भेंट करके पढ़ने के लिए प्रेरित करें।

बड़े साईज का सत्यार्थ प्रकाश बढ़िया कागज तथा सुन्दर बाईंडिंग के साथ तैयार कराया गया है जिसे बिना चश्मे के भी पढ़ा जा सकता है।

हिन्दी के बड़े सत्यार्थ प्रकाश के साथ जो अंग्रेजी का सत्यार्थ प्रकाश दिया जा रहा है वह भी सुन्दर कागज तथा आकर्ष बाईंडिंग में तैयार कराया गया है

20X30 का चौथा साईज

उपरोक्त पुस्तक को मंगाने के लिए नीचे दिये गये दूरभाष नम्बर तथा ई–मेल आई.डी. पर बुक कराकर मंगा सकते हैं। डाक से मंगाने पर डाक व्यय का अतिरिक्त खर्च देना होगा।

—: प्रकाशक :—

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, "दयानन्द भवन" 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली–110002

दूरभाष — 011—23274771, 011—42415359, मो.:—9868211979, 8218863689

ई-मेल : sarvadeshikarya@gmail.com, sarvadeshik@yahoo.co.in

यस्यच्छायाऽमृतम्

विद्यावाचस्पतिः श्री रामदत्त शास्त्री, पक्की सराय, अनूपशहर, बुलन्दशहरम् (उ. प्र.)

वैदिकवाङ्मयं हि नाम मानव मात्रस्य कृते सुखशान्तिसमृद्धिपरिपोषकं पुष्टिवर्धनं मनोविकारापहारि सद्विचारसार समुत्पादनपरं शश्वदात्माभ्युदयकारि जीवनज्योतिरादीप्तिकरम्। वैदिकवाङ्मयतरुर्हि नितरामच्छितो विततोऽहर्निशघनच्छाया प्रदायी मधुरफलवान्, समभ्युपेतपरिश्रान्तजनमानस शंकरोऽविरतवितततापपापहारी जगज्जीवातुरूपः। साम्प्रतम् अस्मद्देशे नवयूनां नवयुवतीनां च करेषु नापतति शमं शान्तिप्रदं सून्नतविचारवर्धकं तादृशं मङ्लमयं स्वस्थं सत्साहित्यम्, सदधीत्यनवतरुणा नवतरुण्यश्च्चाविरतं कलुषितविचारधारानिमग्नाः सततं श्रृंङ्गारभावजागरूकाः कामयमाना अपि सत्पथाध्वनीना न भवन्ति, प्रत्युत कलुषितभावभरितसाहित्या धीतितत्परास्तथाविधाऽविरतचलचित्रजगदर्शन संदीप्तकामवासनाऽनलास्तथाविधेष्वेवानिशं विचारेषु ब्रुडित मानसा न कथमपि जीवनाभ्युदयाध्वानं लभन्ते।

सत्यस्य पन्था वितो देवयानः

अयि भारतीया भ्रातरः! यदि यूयं वास्तविकं तथ्यं सुखमासदयितुं कामयध्वे तर्हि त्वरया विहाय विविधान् अवद्यानध्वनः कल्मषान्, भूयो वैदिकमार्गानुररीकुरुत। स एव सारभूतः सत्यो देवयानो महान् पन्था।ः इन्द्रियाणां दमनेन साधुना चेतसा चिन्तयत जन्ममरणापवर्गाय जीवनवैशद्याय वैदिकसंस्कृतिसम्पदम् अविरामोन्नतिपरां कापटिकजनजालनिर्मलगुर्वीम्। एष एव मार्गः सच्चिदानन्दस्वरूपस्य प्रभोः सम्मेलनाय सांसारिक कष्टकलापापहाराय परमशान्तेरुपलब्ध्ये च।

पश्य देवस्य काव्यं न ममार न जीर्यति

भगवती श्रुतिः स्वयं वैदिकसाहित्यस्य संस्तवं कुरुते। ऋग्यजुस्सामाथर्वरूपं देवस्य परमात्मनः काव्यं कवित्वरूपं सार्वकालिकम्, यत्कदापि न जीर्णं भवित, न च म्रियते। एतत्काव्याध्ययनाध्यापनाभ्यामेव परमां शाश्वतिकी च शांति यूयं यास्यथ। अयमेव सुखावहो दुःखापहाश्च मार्गः

नान्यः पन्था विद्यतेऽयनाय

भगवदाराधनं हि जीवनस्य परमं महत्त्वम्। यदि जगति विविधानि अनीकानि विजित्य विविधान् अरीन् संमर्द्य, धन-धान्य विविधालङ्कारसम्भारभूतिं भव्यभावनायोगान् आसाद्य प्रचुरां मेदिनीं च विजित्य तादृशमानन्दम् उपलब्धासि सर्वमिदं क्षणिकं विनाशि च सुखम्। यद्येषु तथ्यं सुखमभविष्यत् तर्हि कथं धनधान्य पूर्णजीवनाः जना आरण्यकाः संजाताः। सकलान् सांसारिकरागान् सांसारिक जनदृष्टौ सुखागारान् विहाय कथ मुनित्वमापन्नाः। कथं जनकादयो राजर्षयः स्वीयां समृद्धां राज्यसमृद्धिं परिहाय विपिनवासिनोऽभूवन्। 'नाल्पे सुखमस्ति भूम्नि सुखम्।' यो वै भूमा तत् सुखम्।' 'भूमा वै परमैश्वरः।

यजुंषि प्रतिपादितम्

पृष्ठ 1 का शेष

आर्य समाज टाण्डा का 13 2वाँ वार्षिकोत्सव समारोह भव्यता के साथ हुआ सम्पन्न

25 नवम्बर, 2023 को द्वितीय सत्र में मुख्य अतिथि श्री संजय मिश्र (अधिवक्ता उच्च न्यायालय, लखनऊ) एवं श्री ओम प्रकाश आर्य (प्रधान–आर्य समाज नई बाजार, बस्ती) की गौरवमयी उपस्थिति में आर्य वीरांगनाओं द्वारा शौर्य प्रदर्शन किया गया, जिसकी संयोजक श्रीमती बबिता जायसवाल जी रहीं। सायंकालीन सत्र में डॉ. रघुवीर वेदालंकार जी की अध्यक्षता में वसुधैव कुटुम्बकम् विषय पर उपस्थित विद्वानों द्वारा सारगर्भित व उपयोगी उपदेश दिया गया।

26 नवम्बर, 2023 को द्वितीय सत्र अपराह्न 1 बजे से श्रीमती शशि कला जी (प्रधानाचार्या– मिश्री लाल आर्य कन्या इंटर कालेज, टाण्डा) के संयोजकत्व में "नारी शक्ति वंदन" सम्मेलन का आयोजन किया गया, जिसकी अध्यक्षता आचार्या डॉ. सूर्या देवी चतुर्वेदा जी ने की। मुख्य अतिथि के रूप में डॉ. शारदा वर्मा एवं डॉ. प्रशिषा मिश्रा जी की उपस्थिति विशेष उल्लेखनीय रही। सायं 6 बजे श्रीमती मीना आर्या धर्मार्थ न्यास के तत्वावधान में विद्वत सम्मान समारोह का आयोजन किया गया, जिसका संचालन "वेद श्रीः" डॉ. ज्वलंत कुमार शास्त्री एवं वेद श्री पंडित दीना नाथ शास्त्री जी ने किया। जिसकी अध्यक्षता सार्वदेशिक सभा के नेता स्वामी आर्यवेश जी ने की। मुख्य अतिथि के रूप में डॉ. शैलेन्द्र नाथ कपूर एवं विशिष्ट अतिथि के रूप में डॉ. बद्री नारायण गुप्त जी उपस्थित रहे। इस अवसर पर डॉ. रघुवीर वेदालंकार, आचार्या डॉ. सूर्या देवी चतुर्वेदा (प्राचार्या–आर्य कन्या गुरुकुल, शिवगंज, सिरोही–राजस्थान), एवं आचार्य चंद्रदेव शास्त्री जी को "वेद श्रीः" अलंकरण से विभूषित किया गया। तत्पश्चात माता भूमिः पुत्रोऽहं पृथिव्याः विषय पर विद्वानों के उपदेश हुए।

27 नवम्बर, 2023 को महर्षि दयानन्द सरस्वती जी की 200वीं जन्म जयंती वर्ष पर दोपहर 12 बजे से सायं 5 बजे तक विशेष कार्यक्रम आयोजित किए गये, जिसका संचालन डॉ. प्रचेतस शास्त्री जी ने किया। मुख्य अतिथि के रूप में डॉ. बद्री नारायण गुप्त जी की उपस्थिति विशेष उल्लेखनीय रही।

कार्यक्रम के अंत में आर्य समाज टाण्डा के यशस्वी प्रधान एवं सम्पूर्ण आयोजन के कर्ता–धर्ता श्री आनन्द कुमार आर्य जी ने सभी के प्रति आभार व्यक्त किया।

आयोजन के अंतिम सत्र के रूप में सायं 7 बजे से राष्ट्रीय कवि सम्मेलन का आयोजन किया गया जिसकी अध्यक्षता पंडित संजय सत्यार्थी ने और संचालन श्री उत्कर्ष आर्य "प्रियम" जी ने किया। इस अवसर पर प्रख्यात कवि आर्य हरीश कौशलपुरी, अनूप अनुपम, सुरेश शर्मा, विवेक विज्ञ एवं छाया पाण्डेय ने अपनी कविता पाठ के द्वारा श्रोताओं का भरपूर मनोरंजन करते हुए वैदिक विचारों की सरिता प्रवाहित की। रात्रि 10 बजे शान्ति पाठ के साथ चार दिवसीय वार्षिकोत्सव का समापन किया गया।

प्रतिदिन सुबह यज्ञ एवं प्रातः सायं भजन एवं उपदेश का कार्यक्रम भी आयोजित किया गया, जिसमें नई दिल्ली से पधारे श्री सहदेव "बेधड़क" के साथ सत्य प्रकाश आर्य (बाराबंकी), श्री राम मगन आर्य (सुलतानपुर) जी ने विशेष सहयोग प्रदान किया।

इस सम्पूर्ण कार्यक्रम के सूत्रधार बाबू आनन्द कुमार आर्य ने समस्त विद्वानों का आभार व्यक्त करते हुए आर्यों का आह्वान किया कि वे महर्षि दयानन्द जी के संदेश को घर–घर पहुंचाने का संकल्प लें। महर्षि के 200वीं जन्म जयन्ती वर्ष के अवसर पर प्रत्येक आर्य कम से कम 200 नये लोगों से सम्पर्क करके महर्षि दयानन्द के व्यक्तित्व एवं कृतित्व से अवगत करायें। आर्य समाज टाण्डा एवं मिश्री लाल आर्य कन्या महाविद्यालय, डी.ए.वी. एकेडमी आदि संस्थाएं प्रतिवर्ष भव्य आयोजन करके महर्षि के मिशन को निरन्तर आगे बढ़ाने का कार्य रही हैं।

कार्यक्रम को सफलता प्रदान करने में उप प्रधान श्री वीरेंद्र कुमार आर्य, मंत्री श्री योगेश कुमार आर्य, उप मंत्री श्री सत्य प्रकाश आर्य, कोषाध्यक्ष श्री संजीव जायसवाल, संयोजक डॉ. अरुण कुमार आर्य, श्री चंद्रगुप्त मौर्य, महिला आर्य समाज की प्रधाना श्रीमती सुशीला देवी, मंत्राणी श्रीमती किरन बाला आर्या, श्रीमती सीमा देवी, श्रीमती तरंगिणी देवी, आदि आर्य समाज के पदाधिकारियों एवं सदस्यों ने तन मन धन से सहयोग करते हुए आयोजन को सफल बनाने में अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया। कार्यक्रम पूर्ण सफलता के साथ सम्पन्न हुआ।

पंजीयन संख्या (R.N.I. No.)- DELMUL/2005/15488
डाक पंजीकरण संख्या DL(c)-01/1213/2021-23
Licence to Post without prepayment of Postage. U (c)-289/2021-23

सोशल मीडिया के माध्यम से स्वामी आर्यवेश जी से जुड़ें

आर्य समाज के त्यागी, तपस्वी एवं तेजस्वी संन्यासी स्वामी आर्यवेश जी से जुड़ने के लिए इस लिंक पर क्लिक करें :- www.facebook.com/SwamiAryavesh व ई-मेल : aryavesh@gmail.com दूरभाष : 011-42415359, 23274771)

प्रतिष्ठा में :-

अवितरण की दशा में लौटाएँ –
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
"दयानन्द भवन" 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली–110002

आर्य समाज हापुड़ का 133वाँ वार्षिकोत्सव भव्यता के साथ सम्पन्न

तप एवं दीक्षा को अपनाने से राष्ट्र ओजस्वी बनता है – स्वामी आर्यवेश

यज्ञ ही संसार का सर्वश्रेष्ठ कर्म है – पं. माया प्रकाश त्यागी

वेदों के मार्ग पर चलकर ही भारत को शिखर पर ले जाया जा सकता है – डॉ. सत्यपाल सिंह

संस्कारित युवा पीढ़ी ही राष्ट्र का आधार है – अनिल आर्य

आर्य समाज हापुड़, उत्तर प्रदेश का 133वाँ वार्षिकोत्सव समारोह 3 दिसम्बर, 2023 को उत्साहपूर्ण वातावरण में सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर सार्वदेशिक सभा के नेता स्वामी आर्यवेश जी, सार्वदेशिक सभा के कोषाध्यक्ष पं. माया प्रमाश त्यागी जी, बागपत से सांसद डॉ. सत्यपाल सिंह, केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अनिल आर्य, आचार्य योगेश जी, स्वामी अखिलानन्द जी, प्रसिद्ध गायक श्री कंचन कुमार जी आदि विद्वानों ने कार्यक्रम की शोभा बढ़ाई।

राष्ट्र जागृति सम्मेलन में सार्वदेशिक सभा के नेता स्वामी आर्यवेश जी ने अपने विचार रखे कहा कि वेद के मन्त्रों के अनुसार जिस राष्ट्र के लोग तप एवं दीक्षा को जीवन में आत्मसात कर लेते हैं वह राष्ट्र ओज एवं बल से परिपूरित हो जाता है। ऐस राष्ट्र पूरे विश्व का नेतृत्व करता है। भारत प्रारम्भकाल से ही वैदिक मान्यताओं एवं सिद्धान्तों का अनुयायी रहा है। इसीलिए इसे विश्व गुरु होने का गौरव प्राप्त रहा है। वर्तमान समय में तप एवं दीक्षा लोगों के जीवन से गायब दिखाई देती है, जिसके कारण भारत बहुत पीछे है।

सार्वदेशिक सभा के कोषाध्यक्ष पं. माया प्रकाश त्यागी जी ने अपने उपदेश में कहा कि यज्ञ संसार का सर्वश्रेष्ठ कर्म है। यज्ञ से मनुष्य की सभी कामनाएं पूर्ण होती हैं। उन्होंने यज्ञ की व्याख्या करते हुए कहा कि प्रत्येक वह कार्य जिससे सब प्राणियों का कल्याण होता हो वह यज्ञ कहलाता है। अतः हमें अपने जीवन में यज्ञीय भावना के अनुसार कार्य करना चाहिए।

पूर्व केंद्रीय मंत्री डॉ. सत्यपाल सिंह सांसद बागपत ने अपने ओजस्वी उद्बोधन में कहा की राष्ट्र जागृति का कार्य सर्व प्रथम महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने किया था। उनके द्वारा स्थापित आर्य समाज अपने स्थापना काल से अब तक

राष्ट्र का सजग प्रहरी बन कर इस ओर निरंतर कार्य कर रहा है। वर्तमान में अनेकों समस्याएं हैं। हमें वेदों के मार्ग पर चलते हुए भारत को उन्नति के शिखर पर ले जाना है। राष्ट्रवादी संगठनों को अपने साथ मिलाकर कार्य करना चाहिए।

युवा जागृति सम्मेलन को सम्बोधित करते हुए केन्द्रीय आर्य युवक परिषद के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अनिल आर्य ने कहा कि संस्कारित युवा पीढ़ी ही राष्ट्र का आधार हैं, उन्हें सुसंस्कारित करना आर्य समाज का दायित्व है। उन्होंने कहा कि आर्य समाज एक क्रांतिकारी आंदोलन है जो हर राष्ट्रीय मुद्दे पर अग्रणी भूमिका निभाता है।

आचार्य योगेश जी वैदिक ने अपने विचार रखते हुए कहा कि हमें अपने बच्चों को संपत्ति के साथ–साथ संस्कार भी देने की आवश्यकता है जिससे परिवार, समाज एवं राष्ट्र का कल्याण संभव हो सके।

सुप्रसिद्ध गायक कंचन कुमार और प्रवीण आर्य ने मधुर भजन प्रस्तुत किए। आर्य समाज के प्रधान पवन आर्य, मंत्री संदीप आर्य, यज्ञ वीर चौहान, अमित शर्मा, महिला प्रधान वीना आर्या, माया आर्या आदि ने योगदान दिया।

कार्यक्रम की अध्यक्षता श्री नरेंद्र आर्य ने की। मंच का संचालन बड़ी कुशलता के साथ श्री आनंद प्रकाश आर्य जी ने किया। कार्यक्रम के अन्त में उन्होंने सभी विद्वानों, आर्य समाज के सक्रिय सदस्यों तथा नगर एवं विभिन्न आर्य समाज से पधारे व्यक्तियों का धन्यवाद किया। कार्यक्रम के सहसंयोजक श्री मदन लाल गोयल रहे।

समाजसेवी आर्यनेता डॉ. लक्ष्मणदास आर्य जी का आकस्मिक निधन

आर्य समाज एवं महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के सच्चे अनुयायी एवं मध्य भारतीय आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान डॉ. लक्ष्मणदास आर्य जी का विगत दिनों अचानक निधन हो गया है। आदरणीय डॉ. लक्ष्मणदास जी जीवन पर्यन्त आर्य समाज के प्रचार-प्रसार एवं वैदिक सिद्धान्तों की रक्षा के लिए कार्य करते रहे। डॉ. लक्ष्मणदास जी बहुत ही सुलझे हुए आर्य नेता थे, उन्होंने जीवन पर्यन्त आर्य सिद्धान्तों एवं स्वामी दयानन्द सरस्वती जी के विचारों को जन-जन तक पहुँचान में तन्मयता से जुटे रहे। वे सार्वदेशिक सभा के भी उपप्रधान रहे। ऐसे कर्मठ समाजसेवी, आर्यनेता का निधन आर्य समाज संगठन एवं राष्ट्र की अपूर्णीय क्षति है। उनके निधन पर पूरे आर्य जगत की ओर श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करता हूँ कि उनकी आत्मा को शांति एवं सद्गति प्रदान करें तथा पारिवारिक जनों एवं सगे-सम्बन्धियों को इस दुःख को सहन करने की शक्ति दें। - सम्पादक

प्रो० विठ्लराव आर्य, सभा मंत्री, प्रकाशक व मुद्रक द्वारा सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, 3/5 महर्षि दयानन्द भवन, (रामलीला मैदान/आसफ अली रोड), नई दिल्ली-110002 के लिए प्रकाशित तथा ज्योति प्रिंटिंग प्रेस, ई-94, सैक्टर-6, नोएडा-201301 से प्रकाशित एवं मुद्रित। (दूरभाष : 011-23274771)
सम्पादक : प्रो० विठ्लराव आर्य (सभा मन्त्री) मो.:0-9849560691, 0-9013251500 ई-मेल : sarvadeshik@yahoo.co.in, sarvadeshikarya@gmail.com वैबसाइट : www.vedicaryasamaj.com
वैदिक सार्वदेशिक साप्ताहिक में छपे लेखों तथा विचारों से सम्पादक या सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की सैद्धान्तिक मतैक्यता होना अनिवार्य नहीं है।